

डॉ. डेव मैथ्यूसन, हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्यान 24, एनटी में ओटी

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

चौथा मुद्दा या प्रश्न जिसे नए नियम में पुराने नियम के उपयोग का अध्ययन करने वाले छात्र पूछने में रुचि रखते हैं, वह है रब्बीनिक तकनीकों का उपयोग। पिछले सत्र में, फिर से, हमने कुछ ऐसे तरीकों के बारे में बात की थी, जिनके द्वारा प्रारंभिक रब्बी साहित्य ने मिड्रैश पेशर जैसी तकनीकों का उपयोग करके पुराने नियम की व्याख्या की थी, यानी एक पाठ लेना और फिर उसे खोलना, उसे समझाना, कभी-कभी भाषा का उपयोग करना, यह क्या यह वही है जो पुराने नियम के पाठ में कहा गया था, पुराने नियम को अपने समय में पूरा होते देखना, या छोटे से बड़े की ओर बहस करना, या समान शब्दों के आधार पर ग्रंथों को जोड़ना, आदि आदि।

बहुत से लोगों ने यह प्रश्न पूछा है कि क्या नए नियम के लेखक अपने समय की व्याख्या और व्याख्यात्मक तकनीकों के मानक सिद्धांतों का पालन कर रहे हैं, और यदि हां, तो नए नियम के लेखक द्वारा पुराने नियम का उपयोग करने के तरीके में रब्बी व्याख्याकारों के व्यवहार के विपरीत क्या अंतर है? पुराना नियम भी. और फिर अंत में, एक प्रश्न जो छात्रों ने उठाया है वह यह है कि क्या हम पुराने नियम के साथ उसी तरह व्यवहार कर सकते हैं? क्या हमें पुराने नियम के साथ उसी तरह व्यवहार करने की अनुमति है जैसे हम नए नियम के लेखकों को इसके साथ व्यवहार करते हुए पाते हैं? ये महत्वपूर्ण प्रश्न हैं, लेकिन हाल ही में अन्य प्रश्न भी उठाए गए हैं कि हम नए में पुराने नियम के उपयोग को कैसे समझते हैं, और मुद्दों में से एक यह है कि हम नए में पुराने नियम के उपयोग को कैसे वर्गीकृत या वर्गीकृत करते हैं। और आम तौर पर, न्यू टेस्टामेंट के छात्रों ने तीन संभावित उपयोगों को अलग या वर्गीकृत किया है।

एक वह है जिसे प्रत्यक्ष उद्धरण के रूप में जाना जाता है। यहीं पर एक लेखक स्पष्ट रूप से पुराने नियम के पाठ के उपयोग का संकेत देता है। अर्थात्, वह स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि वह चाहता है कि उसके पाठक पुराने नियम के पाठ पर ध्यान दें।

और आम तौर पर यह प्रत्यक्ष उद्धरण एक उद्धरण सूत्र का उपयोग करके इंगित किया जाता है, कुछ इस तरह, जैसा कि यशायाह पैगंबर में लिखा गया है, या होशे में जो कहा गया था उसे पूरा करने के लिए यह हुआ, या जैसा लिखा है, कुछ सूत्र यह इंगित करता है कि लेखक का इरादा पुराने नियम के पाठ को उद्धृत करना या पाठक को उसकी ओर इंगित करना है। और फिर आमतौर पर आपको जो मिलता है वह पुराने नियम के पाठ का एक उद्धरण होता है जिसे आमतौर पर बरकरार रखा जाता है। दूसरा है संकेत की श्रेणी।

नए नियम के कुछ विद्यार्थियों ने संकेतों की ओर ध्यान आकर्षित किया है। यानी, नंबर एक के विपरीत, जहां उद्धरण स्पष्ट है, इसे एक सूत्र द्वारा पेश किया जाता है, इसे आमतौर पर नए नियम के पाठ में ही बरकरार रखा जाता है। और एक संकेत में, लेखक आपको पुराने नियम के पाठ की ओर इंगित करने के अपने इरादे का संकेत नहीं देता है।

लेकिन इसके बजाय, वह आम तौर पर शब्दों और संरचना और अवधारणाओं को लेता है और उन्हें अपने प्रवचन में पिरोता है। इसलिए यह अभी भी स्पष्ट है कि एक पुराने नियम का पाठ, विशेष रूप से यदि किसी के पास पुराने नियम का अपेक्षित ज्ञान है, तो यह स्पष्ट है कि एक पुराने नियम के पाठ को संदर्भित किया जा रहा है, लेकिन लेखक उद्धरण सूत्र के साथ स्पष्ट रूप से संकेत नहीं देता है, जैसे कि जैसे, जैसा लिखा है। और लेखक, लेखक, इसके बजाय, आम तौर पर भाषा को अपने प्रवचन में बुनता है।

वह संकेत कहलाता है। और यद्यपि उद्धरण की तुलना में पहचानना थोड़ा अधिक कठिन है, फिर भी समान संरचना, समान शब्दावली, समान अर्थ, सुझाव देते हैं कि लेखक पाठक को पूर्व पुराने नियम के पाठ की ओर इंगित करना चाहता है। उदाहरण के लिए, संकेत का एक अच्छा उदाहरण इफिसियों अध्याय 1, 20 से 22 है, एक ऐसा पाठ जो मुझे लगता है कि हमने पहले पढ़ा होगा।

लेकिन इफिसियों के अध्याय 1 और 20, 20 से 22 में, हम पाते हैं कि पॉल स्पष्ट रूप से पुराने नियम के पाठ को उद्धृत नहीं कर रहा है, लेकिन हमें कई ऐसे शब्द मिलते हैं, हमें इस पाठ में

ऐसी भाषा मिलती है जो स्पष्ट रूप से पुराने नियम के पाठ का विचारोत्तेजक है। तो यहाँ बताया गया है कि वह मसीह का वर्णन कैसे करता है। वह कहते हैं, ईश्वर की उस शक्ति का जिक्र करते हुए जो मसीह में काम करती थी, श्लोक 20, जो उसने, जिसे ईश्वर ने मसीह में तब लागू किया था जब उसने उसे मृतकों में से उठाया था, और उसे स्वर्गीय स्थानों में दाहिने हाथ पर बैठाया था।

उसे दाहिनी ओर बैठाने की वह भाषा, भजन 110 की शब्दावली और भाषा को याद दिलाती है। फिर वह आगे बढ़ता है और कहता है, उसे सभी शासन और अधिकार और शक्ति और प्रभुत्व से बहुत ऊपर बैठाया गया है, और हर उपाधि जो न केवल दी गई है वर्तमान युग में, लेकिन आने वाले युग में। और भगवान ने सभी चीजों को अपने पैरों के नीचे रख दिया, जो भजन अध्याय 8 में शब्दावली को दर्शाता है। इसलिए पुराने नियम को उद्धृत किए बिना, इसकी भाषा और यहां तक कि इसकी संरचना को लेकर और इसे अपने प्रवचन में पिरोकर, लेखक, संकेत के माध्यम से, इरादा रखता है इफिसियों के अध्याय 1 में यीशु मसीह के व्यक्तित्व को समझने के लिए अब हमें मुख्य पुराने नियम के ग्रंथों की ओर संकेत करना है। एक अंतिम और तीसरी श्रेणी वह है जिसे अक्सर प्रतिध्वनि के रूप में लेबल किया जाता है।

कुछ लोग कहेंगे कि प्रतिध्वनि पुराने नियम का अधिक सूक्ष्म उपयोग है जो शायद नहीं है, या पुराने नियम का सूक्ष्म प्रतिबिंब है, जो लेखक द्वारा इरादा भी नहीं किया जा सकता है। कभी-कभी यह केवल एक या दो शब्द होते हैं, लेकिन विचार यह है कि यह मन में अधिक गूँजता है। यह संकेत जितना स्पष्ट नहीं है।

कोई इन तीनों को अधिक स्पष्ट से अधिक सूक्ष्म तक के पैमाने पर देख सकता है। उद्धरण जितना अधिक स्पष्ट होगा, प्रतिध्वनि के रूप में उपयोग उतना ही अधिक सूक्ष्म होगा। फिर, अक्सर वे लगभग पुराने नियम के पाठ की फुसफुसाहट होते हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि यह स्पष्ट नहीं है कि लेखक, नए नियम के लेखक, इस पुराने नियम के पाठ को संदर्भित करने का इरादा रखते हैं।

एक उदाहरण देने के लिए, जिसे कुछ अन्य लोगों ने फिलिप्पियों के अध्याय 1, श्लोक 19 में, प्रेरित पॉल द्वारा, वास्तव में जेल में अपनी परिस्थितियों का वर्णन करते हुए, इस दस्तावेज़ में

इंगित किया है और ध्यान आकर्षित किया है, जिसे अक्सर जेल पत्र के रूप में जाना जाता है, लेकिन वर्णन करने में अध्याय 1, श्लोक 19 में जेल में उसकी परिस्थितियाँ, पॉल यह कहता है, हाँ, मैं आनन्दित होता रहूँगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि आपकी प्रार्थनाओं और यीशु मसीह द्वारा दी गई सहायता के माध्यम से, जो मेरे साथ हुआ है वह मेरे लिए बदल जाएगा मुक्ति. यह दिलचस्प है कि मेरी मुक्ति के लिए प्रार्थना करना लगभग शब्दशः प्रतीत होता है जो कि अय्यूब अध्याय 13 और श्लोक 16 में पाया जाता है। इसलिए इस बात पर बहुत चर्चा हुई है कि क्या पॉल का यह संकेत था या अय्यूब अध्याय 13 की यह प्रतिध्वनि थी। क्योंकि वह कहीं और अय्यूब में दिलचस्पी नहीं लेता है, और विशेष रूप से फिलिप्पियों के अध्याय 1 में पुराने नियम के पाठ को प्रतिबिंबित नहीं करता है। इसलिए कुछ लोगों ने सोचा है कि क्या यह एक संदर्भ था जिसे लेखक ने अय्यूब के लिए अभिप्रेत किया था, या यह कुछ और है एक प्रतिध्वनि की, एक सूक्ष्म उपयोग जिसका लेखक ने इरादा नहीं किया होगा, और क्या हमें पाठ की व्याख्या करने में इसका कोई बड़ा उपयोग भी करना चाहिए? इन तीन उपयोगों, उद्धरण, संकेत और प्रतिध्वनि की पहचान करने के साथ-साथ, जब विशेष रूप से संकेत और प्रतिध्वनि की बात आती है, तो छात्रों को यह पूछने में रुचि रही है कि क्या लेखक ने कहा है, हमें कैसे पता चलेगा कि कोई संकेत है या प्रतिध्वनि है? और आमतौर पर प्रश्न का उत्तर यह कहकर दिया जाता है, अच्छा, क्या लेखक का यह इरादा था? और इसलिए छात्रों ने यह निर्धारित करने के लिए मानदंड भी बनाए हैं कि क्या किसी लेखक ने वास्तव में पुराने नियम के पाठ का उल्लेख किया है।

उदाहरण के लिए, क्या पाठ में समान शब्दांकन है? क्या ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक, नए नियम का लेखक है, जब वह पुराने नियम के किसी पाठ की ओर इशारा करता हुआ प्रतीत होता है, तो क्या नए और पुराने नियम के बीच शब्दों में इतनी समानता है कि संकेत देखने को उचित ठहराया जा सके? क्या पुराने और नए नियम के ग्रंथों के बीच समान संरचना है? क्या लेखक ने पाठ का उल्लेख कहीं और किया है? यदि कोई प्रस्ताव करता है या सोचता है कि लेखक यशायाह की किसी बात का संकेत दे सकता है, तो इसे निश्चित रूप से आगे बढ़ाया और उचित ठहराया जा सकता है यदि कोई यह प्रदर्शित कर सके कि लेखक यशायाह के बारे में जानता था या अपनी पुस्तक में कहीं और यशायाह का उपयोग कर रहा था। क्या अन्य लोगों ने भी ऐसा ही संदर्भ नोट किया है? अन्य, नए नियम के छात्र और टिप्पणीकार, क्या उन्होंने भी इसी तरह के

पुराने नियम या उसी पुराने नियम के संदर्भ पर ध्यान दिया है? अर्थात्, क्या अन्य लोगों ने भी संकेत को सुना है और संकेत को पहचाना है? हालाँकि स्पष्ट रूप से यह अंतिम मानदंड नई अंतर्दृष्टि या संकेतों की खोज की अनुमति नहीं देता है जो किसी और ने नहीं किया, लेकिन छात्रों को यह पता लगाने में रुचि है कि हम इसे कैसे उचित ठहराते हैं? एक उद्धरण थोड़ा आसान है, लेकिन जब लेखक किसी सूत्र से शुरू नहीं करता है, जैसा कि यह लिखा गया था या यह यिर्मयाह द्वारा कही गई बात को पूरा करने के लिए हुआ था या ऐसा कुछ, तो हम इसे कैसे उचित ठहरा सकते हैं? खैर, फिर से, शब्दावली, समान शब्दावली, समान संरचना, समान अर्थ और कार्य जैसी चीजें। क्या लेखक पाठ को कहीं और संदर्भित करता है, उसे उद्धृत करता प्रतीत होता है या कहीं और संकेत करता है? ये उस तरह की चीजें हैं जिनकी ओर इशारा किया गया है।

साथ ही, इन मानदंडों के अलावा, इन मानदंडों का उपयोग आमतौर पर आत्मविश्वास के उस स्तर को स्थापित करने के लिए किया जाता है जिसे नए नियम के छात्र प्राप्त कर सकते हैं, आत्मविश्वास के उस स्तर को जिसे वे प्राप्त कर सकते हैं, कि उन्होंने वास्तव में एक पुराने नियम के संकेत की पहचान की है . इसलिए कभी-कभी आप न्यू टेस्टामेंट के छात्रों को इस बारे में बात करते हुए देखेंगे कि क्या कोई संकेत निश्चित है, और फिर यह उद्धरणों के साथ इतना अधिक नहीं है, लेखक स्पष्ट रूप से उद्धरणों का संकेत देता है, लेकिन क्या कोई संकेत निश्चित है, इसका मतलब यह है कि शब्दों में पर्याप्त समानता है संरचना, कार्य में, और इस बात का सबूत है कि लेखक ने अन्य पुराने नियम के ग्रंथों और विशेष रूप से उसी पुस्तक के अन्य ग्रंथों का उपयोग किया है, तो कुछ छात्रों का कहना है कि हम निश्चित हो सकते हैं कि लेखक का इरादा पुराने नियम के संकेत का है। अगली श्रेणी संभावित होगी, अर्थात् हम निश्चितता के स्तर पर नहीं पहुंच सकते हैं, लेकिन उच्च स्तर की संभावना है कि लेखक वास्तव में पुराने नियम के पाठ को वापस संदर्भित करने का इरादा रखता है।

हमें बताने के लिए उपस्थित लेखक के बिना, जाहिर तौर पर हम केवल संभाव्यता का सुझाव दे सकते हैं। तीसरी श्रेणी संभव है, कुछ ने कहा है कि कुछ संकेतों को संभव की श्रेणी में रखा जाना चाहिए, हम वास्तव में निश्चित नहीं हो सकते हैं, न ही हम उच्च स्तर की संभावना स्थापित कर सकते हैं, यह केवल एक संभावना है कि लेखक ने वास्तव में यही इरादा किया था। और फिर अंत

में, असंभावित, यानी पुराने नियम के संदर्भ के लिए कुछ प्रस्ताव वास्तव में असंभावित हैं, किसी भी संदर्भ में पुराने नियम के संकेत को देखने का औचित्य सिद्ध करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

इसलिए आमतौर पर ये श्रेणियां मुख्य रूप से उस आत्मविश्वास के स्तर को आकर्षित करती हैं जिसे हम हासिल कर सकते हैं कि क्या हमने एक वास्तविक संकेत या प्रतिध्वनि या उसके जैसा कुछ अलग कर लिया है। एक और टिप्पणी जोड़ने के लिए, हाल के अध्ययनों में अंतरपाठीयता की हालिया घटना के प्रकार में भी रुचि रही है, और यह हमारे पुराने नियम को नए में पढ़ने के तरीके को कैसे प्रभावित करता है। और उस संबंध में केवल दो फोकस, नंबर एक इंटरटेक्स्टुअलिटी में फोकस है और इंटरटेक्स्टुअल अध्ययन पर फोकस लेखक पर इतना अधिक नहीं है।

मेरे द्वारा उठाए गए अधिकांश मुद्दे मुख्य रूप से लेखक के इरादे और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर केंद्रित हैं, चाहे लेखक हमें पुराने नियम के पाठ की ओर इंगित करना चाहता हो, लेकिन अंतर्पाठीयता पुराने और नए नियम के बीच संबंधों को केवल लेखक तक ही सीमित नहीं करती है। अभिप्रेत। लेकिन इसके बजाय, क्या प्रस्तावित पुराने नियम का संकेत उत्पादक है और एक व्यावहारिक या वैध पढ़ने के लिए बनाता है, या पाठ में नई अंतर्दृष्टि जोड़ता है और संदर्भ में समझ बनाता है। इसलिए फोकस लेखक पर नहीं है और लेखक क्या चाहता है, फोकस मुख्य रूप से पाठक द्वारा संभावित पत्राचार की पहचान करने पर है और क्या वह पाठ का उत्पादक वाचन करता है।

अंतर्पाठीयता की दूसरी विशेषता संवाद की है, अर्थात् नए नियम के पाठ में पुराने नियम के पाठ की ओर इशारा करते हुए एक संबंध स्थापित किया जाता है जिसमें दुभाषिया को दो पाठों के बीच पत्राचार की एक श्रृंखला का पता लगाने और पूछने के लिए आमंत्रित किया जाता है। पुराने नियम के पाठ के प्रकाश में नए नियम के पाठ को पढ़ने से क्या फर्क पड़ता है? पुराने नियम का पाठ नए पाठ में क्या अर्थ रखता है और नया पाठ पुराने नियम के पाठ को कैसे बदल देता है? और इसलिए लक्ष्य पुराने और नए नियम के ग्रंथों के बीच संभावित अंतःक्रियाओं का पता लगाना, पुराने और नए नियम को एक-दूसरे के साथ संवाद में देखना और यह पूछना है कि वह क्या

करता है। तो हम नए नियम में पुराने नियम के उपयोग का अध्ययन और नए नियम के लेखकों द्वारा पुराने नियम के पाठ के उपयोग का विश्लेषण कैसे करें? मुझे हमारी पिछली चर्चा के आधार पर संक्षेप में कुछ सुझाव देने दीजिए और फिर हम कुछ स्पष्ट उदाहरणों पर विचार करने के लिए आगे बढ़ेंगे। सबसे पहले मैं सुझाव दूंगा कि अधिक उपयोगी उपकरणों में से एक टिप्पणियों और अन्य कार्यों का सर्वेक्षण करना है जो पुराने नियम के संकेतों और उपयोगों पर ध्यान आकर्षित करते हैं, ऐसा नहीं है कि यह अंतिम कथन है, लेकिन कम से कम यह हमें समझने में मदद करता है और देखें कि नए नियम के अन्य व्याख्याकारों ने, पुराने नियम के किन ग्रंथों को देखा है और किस ओर ध्यान आकर्षित किया है।

हालाँकि, यह योग्य होना चाहिए, जितना अधिक मैं करता हूँ ऐसा प्रतीत होता है कि कभी-कभी टिप्पणियाँ बस दोहराई जाती हैं और इस पर निर्भर करती हैं कि उनके पहले की अन्य टिप्पणियाँ क्या कह चुकी हैं। तो हो सकता है कि उन्होंने अपना काम नहीं किया हो, हो सकता है कि वे बस वही मान रहे हों जो दूसरों ने कहा है। लेकिन शुरुआत करने के लिए एक अच्छी जगह अन्य टिप्पणियाँ और उपकरण हैं जो संभावित पुराने नियम के संकेतों पर आपका ध्यान केंद्रित करने में मदद करेंगे।

उद्धरणों को पहचानना अधिक आसान है, लेकिन संकेत, यहाँ तक कि गूँज, पुराने नियम के अधिक सूक्ष्म उपयोग, आपको कभी-कभी टिप्पणियों में मदद मिलेगी। लेकिन इससे भी आगे मैं कहूँगा कि बस नए नियम के प्रति जागरूक रहें और सुनें, नए नियम के पाठ को सुनें, पुराने नियम और नए नियम के बीच संभावित पत्राचार को सुनने के लिए अपने कान खुले रखें। यह पुराने नियम के ज्ञान को मानता है, इसलिए जितना अधिक आप पुराने नियम को जानते हैं, जितना अधिक आप पुराने नियम के पाठ और उनके संदर्भ के बारे में जानते हैं, आप नए नियम में प्रतिध्वनि सुनने के लिए उतनी ही बेहतर स्थिति में होंगे। मूलपाठ।

तीसरा, जितना संभव हो संदर्भ के प्रकार की पहचान करें, चाहे वह उद्धरण हो, चाहे आप किसी संकेत से निपट रहे हों, या अधिक सूक्ष्मता से आप किसी प्रतिध्वनि से निपट रहे हों। चौथा, पाठ के स्वरूप पर विचार करें। मुझे लगता है कि यह पूछना वैध है कि क्या लेखक मुख्य रूप से

सेप्टुआजेंट में चित्र बना रहा है? क्या पुराने नियम के पाठ का रूप मुख्यतः हिब्रू पाठ है? और क्या कोई फ़र्क नजर आता है? क्या इससे नए नियम में पुराने नियम के उपयोग को समझने में कोई फ़र्क पड़ता प्रतीत होता है? अगला, ऐतिहासिक और शाब्दिक रूप से, पुराने नियम के पाठ का उसके मूल संदर्भ और सेटिंग में क्या अर्थ है? पुराने नियम के पाठ का मूल अर्थ और इरादा क्या प्रतीत होता है? एक अन्य, अगला, इस बात पर विचार करता है कि प्रारंभिक यहूदी और रब्बी व्याख्याकारों द्वारा पुराने नियम के पाठ की व्याख्या प्रारंभिक यहूदी धर्म में कैसे की गई थी।

उदाहरण के लिए, मृत सागर स्क्रॉल या अन्य रब्बी साहित्य, यहां तक कि स्यूडेपिग्राफा और एपोकैलिप्टिक साहित्य में पूछें, और यहां आपको नए में पुराने नियम के उपयोग पर टिप्पणियों और अन्य विशेष कार्यों पर निर्भर रहना होगा, यह पूछें कि कैसे क्या यह पाठ, पुराने नियम का पाठ, स्पष्ट रूप से प्रारंभिक यहूदी और रब्बी व्याख्या में व्याख्या और उपयोग किया गया था? और अगला यह विचार करना है कि नए नियम के लेखक ने पुराने नियम के पाठ का उपयोग कैसे किया है। यह अपने नए नियम के संदर्भ में कैसे कार्य करता है? पुराने नियम का पाठ नए नियम में क्या अर्थ लाता है? यानी, मैं यह सवाल पूछना चाहता हूं कि नए नियम के पाठ में क्या अर्थ गायब होगा यदि मैंने इसे पुराने नियम के उपपाठ के प्रकाश में नहीं पढ़ा, जिस पाठ को लेखक चित्रित करता हुआ प्रतीत होता है? लेखक ने इसका उपयोग किस प्रकार किया है? फिर, क्या यह एक सीधी भविष्यवाणी की पूर्ति प्रतीत होती है? क्या यह अधिक प्रतीकात्मक, सादृश्यात्मक है, या इसका उपयोग केवल चित्रण के माध्यम से या ऐसा ही कुछ है? ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक पुराने नियम के पाठ का उपयोग किस प्रकार कर रहा है? यह अपने संदर्भ में कैसे कार्य कर रहा है? और आगे, अन्वेषण करें। मुझे लगता है कि अंतरपाठ्यता की अंतर्दृष्टि में से एक संवाद की अवधारणा को समझना है।

दोनों पाठों के बीच संभावित अंतःक्रियाओं का अन्वेषण करें। यह उस घटना का एक उदाहरण हो सकता है जिसके बारे में हमने लेखक के इरादे से बात की है, जब आप शुरू करते हैं, यहां तक कि पुराने नियम के अधिक सूक्ष्म उपयोगों को खोजने या खोजने के लिए भी, और यहां तक कि जब आप पुराने और नए नियम के संदर्भों की तुलना करना शुरू करते हैं और कनेक्शन देखते हैं, तो कभी-कभी यह होता है यह जानना बहुत कठिन है कि लेखक का इनमें से कोई

इरादा था या नहीं। और कभी-कभी यह केवल उस प्रकार का मुद्दा हो सकता है जिसके बारे में हमने लेखक के इरादे से बात की है।

क्या यह उस प्रकार की बात है जहाँ यदि लेखक उपस्थित थे और आपने कहा, तो क्या आप इस पुराने नियम के पाठ का उल्लेख कर रहे थे? लेखक कह सकता है, नहीं, मैं नहीं था, लेकिन अब जब आपने उसे पहचान लिया है या अब आपने वह मुद्दा उठाया है, तो यह निश्चित रूप से समझ में आता है। और मैं इसे अपने काम में एक वैध अंतर्दृष्टि के रूप में स्वीकार करूँगा। या फिर, लेखक का इरादा पुराने नियम के किसी पाठ की ओर संकेत करने का हो सकता है, लेकिन जैसे-जैसे आप इसका अन्वेषण करेंगे, आपको कुछ संबंध दिखाई दे सकते हैं।

और फिर, यदि आप लेखक से पूछें, तो लेखक कह सकता है, नहीं, मेरा उन कनेक्शनों का इरादा नहीं था, लेकिन अब जब आप उन पर गौर करते हैं, तो यह समझ में आता है। और मैं इसे अपने पाठ में वैध अंतर्दृष्टि के रूप में स्वीकार करूँगा। इसलिए मैं इस बात से सहमत हूँ कि हालाँकि मुझे अभी भी लगता है कि हमें यह सवाल पूछना होगा कि लेखक का क्या इरादा रहा होगा, जहाँ तक पुराने नियम के ग्रंथों का उल्लेख है, शायद हम खुद को उस तक सीमित नहीं रख सकते हैं।

और यह हमारा शुरुआती बिंदु होना चाहिए, लेकिन हमें पाठों के बीच ऐसे सूक्ष्म संकेत या संबंध मिल सकते हैं जिनके बारे में हम आश्चर्य नहीं हो सकते कि लेखक का इरादा था, लेकिन फिर भी पाठ का अर्थ समझ में आता है और लेखक के बारे में हम जो जानते हैं, उसे देखते हुए यह मान्य है। हम पुराने और नए नियम के पाठों और उनके संदर्भ के बारे में जो जानते हैं, वह पाठ की एक वैध समझ और पढ़ने जैसा प्रतीत होता है। तो एक और सवाल यह पूछना है कि क्या नए नियम के लेखक पुराने नियम के पाठ का उपयोग रब्बीनिक यहूदी धर्म और प्रारंभिक यहूदी व्याख्या में जिस तरह से किया गया था, उसके अनुरूप या उसके समान प्रतीत होता है। लेकिन फिर, अंततः मुझे लगता है कि पूछने लायक छठा प्रश्न, या छठा सिद्धांत, यह समझना है कि पुराने नियम के पाठ की समझ अंततः नए नियम के पाठ की व्याख्या करने के तरीके में कैसे अंतर लाती है।

तो फिर, केवल संभावित कनेक्शनों और संकेतों और गूँजों और उद्धरणों को पहचानना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि अंततः कोई यह पूछना चाहता है कि इससे वास्तव में नए नियम के पाठ की व्याख्या में क्या फर्क पड़ता है। तो ये एक तरह से मुद्दों या सवालों का एक संग्रह है जो मुझे लगता है कि नए नियम को समझने के लिए उठाना वैध और महत्वपूर्ण है। पुराने, फिर से पुराने नियम का उपयोग महत्वपूर्ण है क्योंकि नए नियम के लेखक, जैसा कि उन्होंने संकल्पना की कि मसीह ने कैसे पूर्णता लाई, उन्होंने पुराने नियम से उदाहरणों का उपयोग किया, उन्होंने पुराने नियम के ग्रंथों का उपयोग किया और समझा कि आखिरकार पुराना नियम कैसे पूरा हुआ। यीशु मसीह।

जैसा कि मैंने कहा, टिप्पणियों के रूप में आपकी सहायता के लिए कई कार्य मौजूद हैं। नए नियम के पुराने नियम के उपयोग पर शोध का एक हालिया संग्रह डॉन कार्सन और ग्रेग बील द्वारा संपादित एक पुस्तक है जिसे नए नियम में पुराने नियम के उपयोग पर एक टिप्पणी कहा जाता है, और यह निबंधों की एक श्रृंखला है जो नए नियम की प्रत्येक पुस्तक को कवर करती है। , मैथ्यू से रहस्योद्घाटन तक, और अध्याय दर अध्याय कार्यों पर चर्चा करता है, और उद्धरणों पर भी चर्चा करता है, लेकिन पुराने नियम के पाठ के लिए संकेत और कभी-कभी गूँज भी देता है, और धर्मशास्त्रीय और व्याख्यात्मक रूप से, यह कैसे एक नए नियम के पाठ की व्याख्या करने के तरीके में अंतर लाता है, या जिस मार्ग से निपटा जा रहा है। तो अब मैं जो करना चाहता हूँ वह केवल पुराने, नए नियम के कुछ अंशों की जांच करना है जो पुराने नियम को अपनी रचना में स्पष्ट रूप से उपयोग करते हैं, और मेरा ध्यान मुख्य रूप से संकेत पर होगा, हालांकि मैं कुछ उद्धरणों से निपटूंगा , लेकिन मैं मुख्य रूप से संकेत या प्रतिध्वनि पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, पुराने नियम के उपयोग के वे उदाहरण जहां पुराने नियम का पाठ लिया गया है, और इसके शब्दों और संरचना को रचना में बुना गया है, जहां लेखक जरूरी नहीं कि अपने उपयोग का संकेत देता है एक उद्धरण सूत्र द्वारा एक पुराने नियम का।

और मैं गॉस्पेल से एक उदाहरण देखना चाहता हूँ, और फिर हम पॉल और जिसे जनरल एपिस्टल्स के रूप में जाना जाता है, दोनों एपिस्टल्स से कुछ उदाहरण देखेंगे, हम इब्रानियों से एक उदाहरण देखेंगे, और फिर रहस्योद्घाटन की पुस्तक से कुछ उदाहरण देखें, जो संभवतः किसी भी अन्य पुस्तक की तुलना में अधिक व्यापक रूप से पुराने नियम का संकेत देता है,

हालांकि यह कभी भी उद्धरण सूत्र द्वारा इसका संकेत नहीं देता है। फिर, मेरे ऐसा करने का एक और कारण यह भी है कि अतीत में, नए में पुराने नियम के अधिकांश अध्ययनों ने मुख्य रूप से प्रत्यक्ष उद्धरणों पर ध्यान केंद्रित किया है, जहां लेखक, फिर से, एक नए पुराने नियम के पाठ की ओर इशारा करने के अपने इरादे का संकेत देता है। एक उद्धरण सूत्र के साथ, लेकिन हाल ही में, पिछले 20 वर्षों में, संकेत, फिर से, संकेत और गूँज, पुराने नियम के अधिक सूक्ष्म उपयोगों पर ध्यान आकर्षित करने का पुनरुत्थान हुआ है। लेकिन मुझे गॉस्पेल से शुरू करने दें, और मैं मैथ्यू अध्याय 2 पर वापस जाना चाहता हूँ। हमने पहले ही नोट किया है कि मैथ्यू अध्याय 2 में, लेखक ने पुराने नियम से बड़े पैमाने पर उद्धरण दिया है, जो यीशु के शुरुआती आंदोलन को समझाने का काम करता है। बचपन।

आप लगभग पुराने नियम को यीशु के विभिन्न भौगोलिक आंदोलनों को सही ठहराने के लिए इस्तेमाल करते हुए पाते हैं, अध्याय 2 से शुरू करते हुए, इस तथ्य से शुरू करते हुए कि उनका जन्म बेथलेहम में हुआ था, फिर जब वह मिस्र गए और वापस आए, आदि। आपको पुराने नियम के उद्धरण इसमें मिलते हैं मैथ्यू 2 अक्सर यीशु की भौगोलिक गतिविधियों की व्याख्या करता था, फिर से, यीशु के प्रारंभिक बचपन को सही ठहराने के लिए, यह दिखाने के लिए कि प्रारंभिक घटनाएं पुराने नियम के पाठ की पूर्ति से कम नहीं थीं। उनमें से एक जिसे हमने अध्याय 2 और श्लोक 5 में देखा, जहां लेखक ने यहूदी नेताओं को मीका अध्याय 5 और श्लोक 2 से उद्धृत किया है या करवाया है, यानी कि मसीहा का जन्म बेथलेहम में होगा, यह किसी भी चीज़ के करीब प्रतीत होता है एक बिल्कुल सीधी भविष्यवाणी की पूर्ति के लिए।

लेकिन एक अन्य पाठ जिसे हमने मैथ्यू के अध्याय 2 और श्लोक 15 में उठाया है, लेखक ने होशे अध्याय 11 और श्लोक 1 से उद्धरण दिया है, मैंने अपने बेटे को मिस्र से बुलाया है, जब आप होशे अध्याय 11 और श्लोक 1 पर वापस जाते हैं, तो वह ऐसा प्रतीत नहीं होता कि यह ईसा मसीह के जीवन की कोई भविष्यवाणी है। वास्तव में, यह बस एक ऐतिहासिक रिपोर्ट प्रतीत होती है कि ईश्वर ने अपने लोगों को कैसे संरक्षित किया और उनके साथ कैसे व्यवहार किया और वह अपने लोगों इज़राइल से कैसे प्रेम करते थे। और इसलिए होशे का अध्याय 11 और श्लोक 1 इज़राइल राष्ट्र का संदर्भ प्रतीत होता है, और उस श्लोक में वास्तव में कोई संकेत नहीं है कि यह आने वाले

मसीहा या उसके जैसी किसी चीज़ की भविष्यवाणी है, जो सवाल उठाता है, मैथ्यू इसका उपयोग क्यों करता है यह यहाँ मैथ्यू के अध्याय 2 और श्लोक 15 में है? वह यीशु मसीह के जीवन की प्रारंभिक घटना का उल्लेख करने के लिए होशे 11 और पद 1 का उपयोग क्यों करता है? सबसे अधिक संभावना है, सबसे अधिक संभावना यह है क्योंकि मैथ्यू इसे अधिक टाइपोलॉजिकल या एनालॉजिकल रूप से उपयोग कर रहा है, अर्थात्, वह पुरानी वाचा में एक घटना को देखता है जहां भगवान अपने लोगों के साथ व्यवहार करते हैं और अपने लोगों को संरक्षित और प्यार करते हैं, जिसे अब बड़े पैमाने पर प्रकाश में दोहराया जा रहा है। मसीह में पूर्णता।

तो मैथ्यू दावा नहीं करता है, ऐसा लगता है कि वह दावा कर रहा है कि होशे 11 और पद 1 वास्तव में एक भविष्यवाणी थी या अर्थ का दूसरा स्तर है, इसमें एक आने वाले मसीहा की भविष्यवाणी है जिसे अब मैथ्यू ने खोज लिया है। इसके बजाय, मैथ्यू यह कह रहा है कि मैथ्यू अध्याय 2 में मिस्र में ईश्वर द्वारा अपने बेटे, अपने बड़े बेटे यीशु मसीह को संरक्षित करने के साथ, एक पैटर्न को भरना या दोहराना प्रतीत होता है जो पुराने नियम में स्थापित है जब भगवान ने अपने बड़े बेटे को संरक्षित और रखा था। या उसका पुत्र, जो इस्राएल जाति है। और इसके अलावा, जब आप मैथ्यू को ध्यान से पढ़ते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यीशु को इसराइल राष्ट्र की सच्ची नियति को दोहराते हुए और वास्तव में पूरा करते हुए देखा जाता है।

पुराने नियम में इज़राइल ईश्वर का पुत्र था, लेकिन अब ईश्वर के बड़े पुत्र के रूप में यीशु मसीह इज़राइल की कहानी को दोहराते हैं, लेकिन अब इसे निष्कर्ष पर लाते हैं। वह उसे पूरा करता है और पूरा करता है जिसे करने में इज़राइल विफल रहा। और इसलिए उस धारणा के कारण, लेखक एक पुराने नियम का पाठ ले सकता है जिसमें इज़राइल, ईश्वर के पुत्र का उल्लेख है, और अब इसे अपने पुत्र, यीशु मसीह पर लागू कर सकता है, यह दिखाने के लिए कि उसी तरह जैसे ईश्वर ने पुराने नियम में अपने पुत्र को संरक्षित किया था पूर्णता के युग में, ईश्वर एक बार फिर अपने पुत्र, नए इज़राइल को संरक्षित करने और इज़राइल की नियति की पूर्ति के लिए कार्य कर रहा है, जो कि यीशु मसीह का व्यक्तित्व है।

लेकिन इससे परे, पुराने नियम के अधिक सूक्ष्म या मायावी उपयोगों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करने के लिए, मुझे विश्वास है कि मैथ्यू अध्याय 2 में जो कुछ भी चल रहा है, विशेष रूप से शुरुआती छंदों में, एक अंतर्निहित पुराने नियम की कहानी या उप-पाठ चल रहा है। उदाहरण के लिए, सबसे आसान से शुरुआत करने के लिए, जब आप यह कहानी एक ऐसे बच्चे के बारे में पढ़ते हैं जो पैदा हुआ है और जिसके जीवन को एक दमनकारी दुष्ट राजा से खतरा है जो उसे मारना चाहता है, जो सभी बच्चों को मारने का आदेश देता है। राज्य में लड़के, और फिर बच्चे को संरक्षित करके मिस्र में रखा जाता है, और यहाँ तक कि मिस्र का उल्लेख भी, इससे क्या याद आता है? मूल निर्गमन कहानी को याद करने के लिए बहुत अधिक चिंतन की आवश्यकता नहीं है, जहां मूसा, इज़राइल का उद्धारकर्ता, एक बच्चे के रूप में पैदा होता है, और फिरौन उसे मारने की कोशिश करता है और सभी बच्चों को मौत के घाट उतारने का आदेश जारी करता है, फिर भी यह मिस्र में संरक्षित है। और इसलिए पत्राचार को न देखना कठिन है, इसलिए मुझे लगता है कि मैथ्यू जानबूझकर इस कहानी को गढ़ रहा है, हालांकि यह ऐतिहासिक है, और मैं इसे वास्तव में जो हुआ उसके प्रतिबिंब के रूप में लेता हूँ, मैथ्यू बस उस कहानी के मूल के साथ पत्राचार को स्पष्ट कर रहा है निर्गमन यह प्रदर्शित करने के लिए कि अब, एक बार फिर, परमेश्वर अपने लोगों को बचाने और छुटकारा दिलाने के लिए एक नए निर्गमन में एक उद्धारकर्ता को खड़ा कर रहा है।

वास्तव में, श्लोक 20 में, याद रखें जब यीशु मिस्र जाते हैं क्योंकि हेरोदेस उन्हें मारने की कोशिश कर रहा था, हेरोदेस के मरने के बाद, मैथ्यू के अध्याय 2 के श्लोक 20 में एक स्वर्गदूत जोसेफ को दिखाई देता है और कहता है, जो लोग उसके जीवन की तलाश कर रहे हैं वे मर चुके हैं। दिलचस्प बात यह है कि यह लगभग शब्दशः सेप्टुआजिंट, निर्गमन अध्याय 4 श्लोक 19 का ग्रीक अनुवाद है, जो लोग मूसा को मारने के लिए उसके जीवन की तलाश कर रहे हैं। अब वे मर चुके हैं, इसलिए मूसा को अपने जीवन के लिए डरने की ज़रूरत नहीं है।

तो फिर, यीशु को एक नए मूसा के रूप में चित्रित किया जा रहा है, जो पुराने नियम में मूसा की तरह, अपने लोगों का उद्धारकर्ता, उद्धारकर्ता और बचावकर्ता था। एक बार फिर, भगवान एक नए निर्गमन में यीशु को अपने लोगों के उद्धारकर्ता और उद्धारकर्ता के रूप में उठा रहे हैं। एक

मसीहाई राजा के साथ मिलकर बेथलेहम पर तारे की धारणा का उल्लेख करने के लिए बहुत जल्दी, एक डेविड शायद संख्या अध्याय 24 और श्लोक 17 में बिलाम के उस तारे के बारे में भविष्यवाणी को याद करता है जो उदय होगा।

फिर, भले ही मैथ्यू उस पाठ को उद्धृत नहीं करता है, लेकिन ऐसा लगता है कि वह इसका उल्लेख कर रहा है और इसे अपनी कहानी में बुन रहा है। कहानी का एक और दिलचस्प हिस्सा जादूगरों, तथाकथित बुद्धिमान पुरुषों का वर्णन है, हालांकि बुद्धिमान पुरुष संभवतः जादूगर जितना अच्छा शब्द नहीं है। दूसरे शब्दों में, संभवतः ये विदेशी ज्योतिषी हैं, और जो मैथ्यू अध्याय 2 में यीशु से मिलने आते हैं। और इसके बारे में दिलचस्प बात यह पूछना है कि मैथ्यू द्वारा जादूगर के आने और यीशु से मिलने के बारे में क्या महत्वपूर्ण हो सकता है? हमने देखा कि ल्यूक के विपरीत, जिसके पास चरवाहे आए थे, अब मैथ्यू के पास ये जादूगर हैं, ये विदेशी ज्योतिषी अब यीशु से मिलने आ रहे हैं, और वे उसके लिए सोना, लोबान और लोहबान के उपहार लाते हैं।

और इसका महत्व क्या है? मेरी राय में, मैथ्यू अभी भी पुराने नियम के पाठ पर काम कर रहा है। अर्थात्, पुराना नियम अभी भी एक प्रकार का अंतर्निहित उपपाठ है जो मैथ्यू की अपनी कहानी को सूचित कर रहा है। और जिस पाठ पर मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ वह यशायाह अध्याय 60 है।

यशायाह अध्याय 60 इस्राएल और परमेश्वर के लोगों की भविष्य की बहाली के यशायाह के दृष्टिकोण या भविष्यवाणी का हिस्सा है। याद रखें, उन्हें निर्वासन में ले जाया गया है, और यशायाह उस समय की आशा करता है जब लोग वापस लौटेंगे, भगवान अपने लोगों को बहाल करेंगे, भगवान लोगों को उनके शहर, उनकी भूमि पर बहाल करेंगे। और यशायाह का अध्याय 60 उसी की एक प्रत्याशा या भविष्यवाणी है।

और जैसे ही मैंने इसे पढ़ा, मैं चाहता हूँ कि आप मैथ्यू पाठ के साथ संभावित प्रतिध्वनि या प्रतिध्वनि के लिए अपने कान खुले रखें। तो अध्याय 60, उठो, चमको, क्योंकि तुम्हारा प्रकाश आ

गया है, और प्रभु की महिमा तुम पर उभर रही है। ऐसा लगता है मानो बेथलहम के ऊपर चमकता हुआ सितारा उभर रहा हो, जो मसीहा राजा के आगमन का संकेत दे रहा हो।

देख, पृथ्वी पर अन्धियारा छा गया है, और राज्य देश के लोगों पर घना अन्धकार छा गया है, परन्तु यहोवा तुम्हारे ऊपर उदय होगा, और उसका तेज तुम्हारे ऊपर प्रगट होगा। अपनी आँखें ऊपर उठाएं, अन्यथा मुझे खेद है, श्लोक 3, राष्ट्र आपकी रोशनी की ओर आएं, और राजा आपकी सुबह की चमक की ओर आएं, जो जादूगरों को तारे की ओर, तारे की रोशनी की ओर, बेथलहम की ओर प्रतिबिंबित करेंगे। अपनी आँखें उठाओ और अपने चारों ओर देखो, सभी इकट्ठे हो जाओ और तुम्हारे पास आओ।

तेरे पुत्र, अर्थात् इस्राएल की जाति, अब पुनर्स्थापित हो रहे हैं, वे दूर से, निर्वासन से आते हैं, तुम्हारी बेटियाँ बांह पर उठाई जाती हैं, तब तुम देखोगे और दीप्तिमान होगे, तुम्हारा हृदय धड़केगा और खुशी से प्रफुल्लित होगा, की संपत्ति समुद्र तेरे पास लाया जाएगा, और अन्यजातियों का धन तेरे पास लाया जाएगा। ऊँटों के झुण्ड, मिद्यान और एपा के जवान ऊँट तेरे देश में आएं। मुझे थोड़ा नीचे जाने दो।

श्लोक 8, वे कौन हैं जो घोंसलों में बैठे कबूतरों की नाईं बादलों पर उड़ते हैं? निःसन्देह द्वीप मेरी ओर देखते हैं, और मेरी ओर देखते हैं, और तर्शीश के जहाज उनके मार्गदर्शक हैं। ये सभी छवियाँ उस महिमा की हैं जो इस्राएल की पुनर्स्थापना के चारों ओर होंगी। श्लोक 10, परदेशी तेरी शहरपनाह फिर बनाएं, और उनके राजा तेरे आधीन रहेंगे, यद्यपि मैं ने क्रोध में आकर तुझ पर अनुग्रह किया, तौभी मैं तुझ पर दया करूँगा।

तेरे फाटक सर्वदा खुले रहेंगे, दिन हो या रात कभी बन्द न होंगे, ताकि मनुष्य जाति जाति की सम्पत्ति तेरे लिये ला सकें। राजाओं ने विजयी जुलूस का नेतृत्व किया, क्योंकि जो राष्ट्र या राज्य आपकी सेवा नहीं करेगा, वह आपकी सेवा नहीं करेगा, नष्ट हो जाएगा, वह पूरी तरह से बर्बाद हो जाएगा। लबानोन का वैभव तेरे पास आएगा, अर्थात् देवदार, सनौवर, और सनौबर मिलकर पवित्रस्थान को सुशोभित करेंगे, और मैं अपने पांवोंके स्थान को महिमामंडित करूँगा।

एक अन्य पाठ जो मैं पढ़ना चाहता था, उह, छंद 16 से आगे बढ़ते हुए, आप राष्ट्रों का दूध पीएंगे और राजघराने की छाती पर पाले जाएंगे, तब आपको पता चल जाएगा कि मैं भगवान आपका उद्धारकर्ता हूँ, आपका याकूब का उद्धारकर्ता और पराक्रमी। मैं पीतल की सन्ती सोना और लोहे की सन्ती चाँदी लाऊंगा। तो राजाओं और राष्ट्रों की इस कल्पना पर ध्यान दें कि वे यरूशलेम में धन ला रहे हैं, जैसे कि यह बहाल हो रहा है।

मेरी राय में, मैथ्यू उस कहानी को यशायाह अध्याय 60 से उठा रहा है। वह यशायाह 60 की ओर स्पष्ट रूप से संकेत कर रहा है कि विदेशी गणमान्य व्यक्ति अपना धन, सोना और लोबान और लोहबान लाते हैं, उस धन को यरूशलेम या बेथलहम लाते हैं, जब वे आते और जाते हैं मसीहा राजा, उद्धारकर्ता। ऐसा लगता है जैसे मैथ्यू कह रहा है, इसलिए, मैथ्यू सुझाव दे रहा है कि यशायाह की बहाली का वादा, भगवान के लोगों की बहाली, आने वाला, मुक्ति का आने वाला युग, भगवान का आने वाला राज्य, नई रचना का उद्घाटन पहले ही हो चुका है ईसा मसीह का.

और यह विदेशी गणमान्य व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित किया गया है, ये बुद्धिमान लोग धन ला रहे हैं, अपना धन ला रहे हैं, और ये विदेशी लोग एक प्रकाश, उभरते सितारे की उभरती रोशनी के जवाब में यीशु की पूजा करने के लिए अपना धन ला रहे हैं। इसलिए यशायाह अध्याय 60 को उद्धृत किए बिना, मुझे लगता है कि मैथ्यू ने यशायाह 60 जैसे अन्य पुराने नियम के ग्रंथों का उल्लेख करने के अपने इरादे को स्पष्ट रूप से इंगित किया है, यह प्रदर्शित करने के लिए कि वे अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व के आगमन में कैसे पूरे हो रहे हैं। तो यशायाह 60, साथ ही संपूर्ण निर्गमन रूपांकन, मैथ्यू की यीशु की कहानी के लिए महत्वपूर्ण उप-पाठ हैं।

और वह, फिर से, यह प्रदर्शित करने के लिए कई पाठों को एक साथ बुनता है कि कैसे यीशु, उनका जीवन, विशेष रूप से अध्याय 2 में उनका प्रारंभिक बचपन, इनमें से कई पाठों को पूर्णता और चरमोत्कर्ष पर लाता है। पत्र-पत्रिका साहित्य, विशेष रूप से पॉल के पत्रों से कुछ उदाहरणों पर आगे बढ़ने के लिए, मैं एक उदाहरण दूंगा, गलातियों अध्याय 1 में एक बहुत ही संक्षिप्त उदाहरण, और फिर इफिसियों अध्याय 2 में थोड़ा अधिक व्यापक उदाहरण देखें। लेकिन

गलातियों अध्याय 1 और पद्य 15, हम पहले ही इस पाठ को साहित्यिक संदर्भ के संबंध में देख चुके हैं, और कैसे अध्याय 1 और 2 में, पॉल यह तर्क दे रहा है कि उसका प्रेरितत्व और वह जिस सुसमाचार का प्रचार करता है वह कुछ ऐसा नहीं है जो मानव नियुक्ति या मानव शिक्षण के माध्यम से आता है, बल्कि है पूरी तरह से यीशु मसीह के माध्यम से एक रहस्योद्घाटन पर निर्भर। उस सन्दर्भ में वह जो बातें कहता है उनमें से एक, अध्याय 1 श्लोक 15 में, वह कहता है, परन्तु कब, यह गलातियों 1 15 है, पौलुस कहता है, परन्तु जब परमेश्वर जिसने मुझे जन्म से अलग किया और अपनी कृपा से मुझे बुलाया, प्रकट करने में प्रसन्न हुआ उसका बेटा मुझमें।

अब सवाल यह है कि वह जन्म के समय अलग रखे जाने का जिक्र क्यों करेगा? ऐसा लगता है कि यहां यह कहना एक दिलचस्प बात है। उसने यह क्यों नहीं कहा कि परमेश्वर ने मुझे बुलाया है, परमेश्वर ने मुझे प्रेरित बनने के लिये नियुक्त किया है। उसने यह क्यों उल्लेख किया कि उसे जन्म के समय अलग रखा गया था? क्या यह मात्र पॉल का जीवन-समर्थक दृष्टिकोण सामने आ रहा है? क्या पॉल केवल गर्भधारण के समय भी मानव जीवन की गरिमा पर जोर दे रहा है, इसलिए यह एक वैध है, यह गर्भपात विरोधी या जीवन समर्थक का समर्थन करने के लिए एक महत्वपूर्ण पाठ है? मैं निश्चित रूप से इस बात से इनकार नहीं करना चाहता कि इस पाठ का उस पर असर हो सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि इस अनुच्छेद का महत्व, मानव जीवन कब शुरू होता है, इस पर पॉल का निर्णय नहीं है।

लेकिन इसके बजाय, यह कथन वास्तव में वह है जिसे पॉल ने पुराने नियम में पाया है। और मैं केवल दो पाठों पर संक्षेप में नज़र डालना चाहता हूँ जिनके बारे में पॉल सोच रहा होगा। यिर्मयाह का अध्याय 1 और पद 5 पहला है।

यिर्मयाह अध्याय 1 और श्लोक 5 में, जो पुस्तक की शुरुआत में, यिर्मयाह एक भविष्यवक्ता के रूप में अपनी साख स्थापित कर रहा है और एक भविष्यवक्ता के रूप में अपने आह्वान पर चर्चा कर रहा है, जो कि वह जो कहने वाला है उसके लिए औचित्य और प्रामाणिकता प्रदान करेगा। बाकी किताब. पद 5 में, वह कहता है, मैं पद 4 का सहारा लूंगा, हे यिर्मयाह, यहोवा का यह वचन

मेरे पास पहुंचा, कि मैं ने तुझे गर्भ में रचने से पहिले ही तुझे जान लिया। तुम्हारे जन्म से पहले, मैंने तुम्हें अलग कर दिया था।

मैं ने तुझे राष्ट्रों के लिये भविष्यद्वक्ता नियुक्त किया। फिर किसी पुस्तक के समर्थन में एक और दिलचस्प पाठ यशायाह अध्याय 49 में है। यशायाह अध्याय 49 और श्लोक 1 में, हम नौकर के संदर्भ में समान भाषा देखते हैं।

इनमें से कई अध्याय, सबसे प्रसिद्ध यशायाह में अध्याय 53, नौकर को संबोधित कर रहे हैं। अध्याय 49, श्लोक 1, हे द्वीपो, मेरी बात सुनो, हे दूर दूर के राष्ट्रों, मेरी बात सुनो। मेरे जन्म से पहले, यह सेवक बोल रहा है, मेरे पैदा होने से पहले, प्रभु ने मुझे बुलाया।

मेरे जन्म से ही उन्होंने मेरे नाम का जिक्र किया है। विशेष रूप से यिर्मयाह अध्याय 1 श्लोक 5 पाठ के प्रकाश में, गलातियों 1.15 में यह भाषा मुख्य रूप से एक पुराने नियम के संकेत के रूप में है जिसका उद्देश्य पॉल को पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के अनुरूप अपने स्वयं के कमीशन की कल्पना के रूप में चित्रित करना है। पॉल अपने प्रेरितिक बुलावे को पुराने नियम के भविष्यवक्ता के समान अधिकार के रूप में देखता है।

तो फिर से, यहां अपने मामले पर बहस करने की कोशिश करते हुए, कि उनका प्रेरितिक कमीशन और उनका सुसमाचार मनुष्यों द्वारा नहीं आता है, उद्घरण के द्वारा, एक कॉल कथा की पुराने नियम की अवधारणा की ओर इशारा करते हुए, जैसा कि हमने यशायाह 49 में पाया, हम यिर्मयाह में पाते हैं, ईश्वर द्वारा उसे जन्म के समय ही अलग कर देने का विचार, या जब वह गर्भ में ही था तब उसे अलग कर देना, भविष्यवाणी आयोग की भाषा है। ताकि पॉल खुद को पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के अनुरूप, या यशायाह 49 के प्रकाश में, शायद स्वयं सेवक के रूप में कार्य करने के रूप में कल्पना करे। तो यह पॉल के तर्क का एक हिस्सा है, मुझे लगता है, अगर हम पुराने नियम की पृष्ठभूमि से अवगत नहीं होते तो यह छूट जाता, पॉल सीधे उद्घरण के माध्यम से नहीं, बल्कि पुराने नियम के पाठ की ओर इशारा करके अपील करता है।

एक और, थोड़ा अधिक व्यापक उदाहरण, कैसे पॉल पुराने नियम के पाठों को संकेत के माध्यम से अपने शब्दों और संरचनाओं को अपने प्रवचन में पिरोकर अपील करता है, इफिसियों के अध्याय दो और छंद 11 से 22 में पाया जाता है। और मैं करूंगा, मैं करूंगा बस इसका एक भाग पढ़ें, क्योंकि फिर से, पुराने नियम के पाठ की प्रतिध्वनि, प्रतिध्वनि सुनने के लिए हमारे कान खोलने के लिए यह सुनना महत्वपूर्ण है कि क्या हो रहा है। अतः अध्याय दो में, श्लोक 11 से आरंभ करते हुए, स्मरण रखें कि पहिले आप जो जन्म से अन्यजाति थे, और जो आप ही खतनारहित कहलाए थे, वे ही खतना किए हुए हैं।

तुरंत, हम पुराने नियम के संकेत को देखते हैं, किसी विशिष्ट पाठ के लिए नहीं, बल्कि खतने की धारणा के लिए, जो पुराने नियम में मोज़ेक वाचा की एक बहुत ही महत्वपूर्ण विशेषता है। इसलिए खतना का विचार पहले से ही एक पुराने नियम के विचार और अवधारणा को उद्घाटित करता है, यदि कोई विशिष्ट पाठ नहीं है। फिर वह आगे कहता है, स्मरण रखो कि उस समय तुम मसीह से अलग हो गए थे, इस्राएल की नागरिकता से बहिष्कृत हो गए थे, और वाचाओं में परदेशी हो गए थे।

एक और शब्द है वाचाएँ, जो स्पष्ट रूप से नोटिस करेंगी कि यह बहुवचन भी है, संभवतः स्पष्ट रूप से इसके साथ की गई प्रमुख वाचाओं की याद दिलाती है। इब्राहीम के साथ परमेश्वर और इब्राहीम, परमेश्वर और दाऊद के बीच, मोज़ेक वाचा। तो फिर, केवल अनुबंध शब्द के द्वारा, लेखक इस्राएल के इतिहास के एक पूरे खंड को, उन अनुबंधों को, जो परमेश्वर ने उनके साथ बनाए थे, उद्घाटित करता है। इस संसार में तुम्हारे बिना या परमेश्वर के बिना आशा रहित, परन्तु अब मसीह यीशु में, तुम जो एक समय दूर थे, लोहू के द्वारा निकट लाए गए हो, क्योंकि वही हमारी शांति है, क्या यीशु ही हमारी शांति है, जिसने दोनों को एक कर दिया और उसने अपने शरीर में कानून को खत्म करके शत्रुता की विभाजनकारी दीवार को नष्ट कर दिया है, जो मूसा के कानून की ओर स्पष्ट संकेत है, उसकी आज्ञाओं और नियमों के साथ, उसका उद्देश्य अपने आप में एक नया मनुष्य, एक नई मानवता बनाना था इस प्रकार दोनों में शांति स्थापित हो गई।

और इस एक देह में मसीह यीशु के द्वारा उन दोनों का परमेश्वर से मेल कराओ, फिर पद 17 पर चले जाओ। वह आया, और दूर दूर के लोगों को शान्ति का उपदेश दिया। और जो लोग उसके माध्यम से निकट हैं, हम दोनों के पास पहुंच है, मंदिर में पहुंच का एक और पुराने नियम का शब्द, एक आत्मा द्वारा पिता तक पहुंच।

परिणामस्वरूप, अब आप विदेशी और विदेशी नहीं हैं। परन्तु अब परमेश्वर के लोगों के साथ तुम्हारे साथी नागरिक और परमेश्वर के घराने के सदस्य प्रेरितों और पैगम्बरों, स्वयं यीशु मसीह, मुख्य आधारशिला, की नींव पर निर्माण करते हैं। मैं वहीं रुकूंगा।

लेकिन मैं खतना और कानून और अनुबंधों के अलावा कुछ अन्य चीजों पर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, जो कि पुराने नियम की अवधारणाओं के स्पष्ट संदर्भ हैं, यदि विशिष्ट पाठ नहीं हैं। लेकिन उदाहरण के लिए, उस भाषा में उन लोगों को शान्ति का उपदेश देने के बार-बार उल्लेख पर ध्यान दें जो दूर हैं और जो पास में हैं। पॉल में, जो दूर हैं वे अन्यजाति प्रतीत होते हैं जो अब परमेश्वर के नए लोगों में शामिल हैं।

लेकिन शान्ति की यह भाषा, मसीह हमारी शान्ति है जो उन लोगों को शान्ति का उपदेश देता है जो दूर हैं और जो पास में हैं, वह एक बार फिर भविष्यवक्ता यशायाह की भाषा को उद्घाटित करता है। अध्याय में, उदाहरण के लिए, अध्याय 52 और श्लोक सात में, एक पाठ जिसे हममें से कई लोगों ने सुना है। श्लोक सात में 52 में ध्यान दें, लेखक कहता है, पहाड़ों पर उन लोगों के पैर कितने सुंदर हैं जो अच्छी खबर लाते हैं, जो शान्ति की घोषणा करते हैं, जो अच्छी खबर लाते हैं और मोक्ष की घोषणा करते हैं।

लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण, यशायाह के अध्याय 57 और श्लोक 19, अध्याय 50, मुझे क्षमा करें, 57 और श्लोक 19। वह कहते हैं, इसराइल में शोक मनाने वालों के होठों पर शान्ति पैदा करना, दूर और पास के लोगों के लिए शान्ति, शान्ति। अब, पॉल दूर और निकट के लोगों को शान्ति या शान्ति का उपदेश देने की इस भाषा को चुनता है और इसे अपने संदर्भ में बुनता है।

लेकिन इसके अलावा, एक नई मानवता के निर्माण के इस संदर्भ पर ध्यान दें। यह संभवतः यशायाह की संपूर्ण पुस्तक में पाई जाने वाली नई सृजन भाषा को दर्शाता है, विशेष रूप से 43 श्लोक 19 में। हम ईश्वर को नई चीजें बनाते हुए पाते हैं।

अध्याय 62, यह यशायाह अध्याय 62 और पद दो भी है। अध्याय 65 और श्लोक 17 एक और होगा जहां लेखक एक नई रचना का संकेत देता है, मैं एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी बनाऊंगा। तो आपके पास यह नई सृजन भाषा है।

अध्याय 62 और पद दो में, राष्ट्र तेरी धार्मिकता और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे, और तू एक नये नाम से पुकारा जाएगा। तो नवीनता और नई रचना की यह भाषा शायद अब पॉल की नई मानवता की रचना में प्रतिबिंबित होती है। विदेशियों को बाहर करने का विचार, यशायाह अध्याय 56 और श्लोक तीन का पहला भाग विदेशियों को बाहर करने या विदेशियों को शामिल करने का उल्लेख करता है।

यशायाह अध्याय 56 और पद तीन। फिर, यह सब इस्राएल की पुनर्स्थापना और उनके भविष्य में ईश्वर की पुनर्स्थापना के कार्य के संदर्भ में है। वह 56.3 में कहता है, कोई परदेशी जिसने अपने आप को प्रभु से बान्ध लिया है, यह न कहे, प्रभु निश्चय मुझे अपनी प्रजा से निकाल देगा।

इसलिए यशायाह 56 एक ऐसे समय की आशा करता है जब पुनर्स्थापन के समय विदेशियों को भी बाहर नहीं रखा जाएगा। और इसलिए अब पॉल एक ऐसे समय की ओर इशारा करता है जहां जो लोग पहले विदेशी और परदेशी थे वे अब परमेश्वर के एक लोगों में शामिल हैं। यहां तक कि श्लोक 20 में मुख्य आधारशिला के रूप में यीशु मसीह का संदर्भ यशायाह अध्याय 28 और श्लोक 16 का प्रतिबिंब है।

यरूशलेम की पुनर्स्थापना की आधारशिला या मुख्य आधारशिला। इसके अलावा, क्या यशायाह से इन सभी प्रतिध्वनियों और इन सभी संकेतों और गूँजों को सुनना भी संभव है, क्या यह संभव है कि श्लोक 20 में इस घराने की नींव प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के होने का संदर्भ यशायाह 54

का संकेत हो सकता है, जहां श्लोक 11 और 12 में, मेरा मानना है, या 11 से 13 में, यरूशलेम की बहाली को विभिन्न इमारत ब्लॉकों और कीमती पत्थरों की नींव के संदर्भ में देखा जाता है, जहां नींव को एक बहुत ही कीमती पत्थर के रूप में पहचाना जाता है। और हमने पहले देखा, दिलचस्प बात यह है कि कुमरान समुदाय ने यशायाह 54 के इस खंड की व्याख्या, रूपक रूप से, कुमरान समुदाय के संस्थापक सदस्यों के संदर्भ में की थी।

क्या यह संभव है कि यशायाह के इन सभी अन्य संकेतों के साथ, शायद पॉल यशायाह 54 और इसकी नींव के साथ यरूशलेम की बहाली का संकेत दे रहा है, अब वह इसे ईश्वर के घर, चर्च की स्थापना में पूरा होता हुआ देख रहा है, जिसकी नींव पर बनाया गया है प्रेरित और भविष्यवक्ता. तो यशायाह का पुनरुद्धार का कार्यक्रम, नई रचना, ईश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना, अन्यजातियों सहित एक नए लोग, अब यह यीशु मसीह की मृत्यु और एक नई मानवता, ईश्वर के एक नए लोग, जिसमें यहूदी और यहूदी शामिल हैं, के निर्माण में पूरा हुआ है। गैर-यहूदी, चर्च, और यहूदी और गैर-यहूदी का मेल-मिलाप, दोनों के बीच शत्रुता दूर हो रही है, और अब शांति और मेल-मिलाप लाया जा रहा है। पौलुस इन सभी को पूर्णता के रूप में देखता है, यशायाह पहले से ही जो भविष्यवाणी कर रहा था उसकी पूर्ति से कम कुछ भी नहीं।

पुनर्स्थापना का वादा अब इस नई मानवता के निर्माण में यीशु मसीह में पूरा हो रहा है। तो फिर, एक बार फिर, संभावित पुराने नियम की पृष्ठभूमि के प्रकाश में एक नए नियम के पाठ को पढ़कर, इफिसियों के मामले में, संभावित पुराने नियम का उपपाठ, फिर से, अध्याय 2 में, हालाँकि पॉल ने कभी भी इफिसियों की पुस्तक से उद्धरण नहीं दिया, वह इसकी भाषा, इसकी छवियों, इसकी संरचनाओं को लेता प्रतीत होता है, और अब इसे अपने प्रवचन में यह प्रदर्शित करने के लिए बुनता है कि कैसे यीशु मसीह की मृत्यु और नई मानवता, भगवान के लोग, यहूदी और अन्यजातियों से बना चर्च, कैसे यह इसकी पूर्ति है, और पुनर्स्थापना का चरमोत्कर्ष है जिसकी यशायाह ने अपनी भविष्यवाणी के सभी अध्यायों में आशा की थी। पत्रों में एक अंतिम पाठ, नए नियम के पत्र-पत्रिका खंड जिसके बारे में मैं संक्षेप में बात करना चाहता हूँ वह इब्रानियों अध्याय 6 और 4 से 6 है, और मैं उसे फिर से पढ़ूंगा क्योंकि किसी को नए नियम के पाठ को सुनने की आवश्यकता है पुराने नियम की प्रतिध्वनि सुनने में सक्षम।

और इसी तरह, किसी को भी नए नियम को सुनने और नए नियम के पाठ के बारे में जागरूक रहने की आवश्यकता है ताकि वह जो नया नियम पाठ पढ़ता है उसमें गूँज और प्रतिध्वनि सुन सके। लेकिन इब्रानियों अध्याय 6 और 4 से 6, 6, 4 से 6 वास्तव में संभवतः इब्रानियों की पूरी किताब में आने वाली पाँच बल्कि गंभीर चेतावनियों की श्रृंखला में से अधिक प्रसिद्ध है। हम अध्याय 2 में एक पाते हैं, अध्याय 3 और 4 में, और फिर अध्याय 6 में, और फिर अध्याय 10 और 12 में कुछ और पाते हैं।

लेकिन इब्रानियों की पूरी किताब में ये गंभीर चेतावनियाँ बिखरी हुई हैं, और मैं इस पर अधिक विस्तार से चर्चा नहीं करना चाहता कि लेखक ऐसा क्यों करता है। यह मूल रूप से उस स्थिति से संबंधित है जिसे वह संबोधित कर रहे हैं। लेकिन हमें चेतावनियों की ये श्रृंखला मिलती है, और शायद सबसे प्रसिद्ध चेतावनी इब्रानियों के अध्याय 6 और 4 से 6 में पाई जाती है। इसलिए मैं इसे पढ़ना चाहता हूँ, और तब जब हम इसका परिचय देंगे और फिर यह पता लगाना शुरू करेंगे कि यह कैसे हो सकता है पुराने नियम की पृष्ठभूमि हमें इस पाठ को समझने में मदद करती है।

क्योंकि जैसे ही हम इसे पढ़ेंगे, यह स्पष्ट हो जाएगा कि लेखक पुराने नियम से उद्धरण नहीं देता है। और वास्तव में, इस पाठ में मैंने जो कुछ भी पढ़ा है, उनमें से बहुत कम हैं, कम से कम पहले, मुझे लगता है कि यह थोड़ा बदल रहा है, लेकिन बहुत कम लोग हैं जिन्होंने स्वीकार किया है या पाया है इस परिच्छेद में कोई भी पुराने नियम का संदर्भ। इसलिए हम यह पता लगाना चाहेंगे कि क्या यह पाठ पुराने नियम के अंशों को प्रतिबिंबित करता है, और यह इस पाठ के अर्थ और हमारे इसे पढ़ने के तरीके में कैसे अंतर ला सकता है।

लेकिन इब्रानियों अध्याय 6, 4 से 6, फिर से, यह चेतावनी अंशों की श्रृंखला में तीसरा है जहां लेखक मूल रूप से अपने पाठकों को चेतावनी दे रहा है, सुसमाचार से पीछे मत हटो, नई वाचा के उद्धार से अपना मुंह मत मोड़ो यीशु मसीह लाए हैं, लेकिन उन्हें विश्वास से गले लगाओ, चाहे परिणाम कुछ भी हो। इसलिए वह पाठकों से यह आग्रह करने की कोशिश कर रहा है कि वे मसीह और उस सुसमाचार से दूर न जाएं जिस पर उन्होंने स्पष्ट रूप से विश्वास किया है और

प्रस्तुत किया गया है, अपनी पीठ न मोड़ें और यहूदी धर्म की ओर वापस न जाएं, बल्कि विश्वास के साथ यीशु मसीह को अपनाएं, चाहे कुछ भी हो नतीजे। यहां अध्याय 6, 4 से 6 में चेतावनी दी गई है, यह उन लोगों के लिए असंभव है जो एक बार प्रबुद्ध हो चुके हैं, जिन्होंने स्वर्गीय उपहार का स्वाद चखा है, जिन्होंने पवित्र आत्मा में हिस्सा लिया है, जिन्होंने ईश्वर के वचन की अच्छाई का स्वाद चखा है, और आने वाले युग की शक्तियाँ, यदि वे नष्ट हो जाती हैं, या इससे भी बेहतर, और जो फिर दूर हो जाती हैं, तो उन्हें पश्चाताप के लिए वापस लाना असंभव है, क्योंकि अपनी हानि के लिए, वे परमेश्वर के पुत्र को फिर से क्रूस पर चढ़ा रहे हैं, और अधीन कर रहे हैं उसे सार्वजनिक अपमान के लिए।

और मैं अगले सत्र में जिस पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, वह चित्रित किए जा रहे व्यक्तियों के विवरण की सूची है, अर्थात्, ये व्यक्ति जिनका वर्णन 4 से 6 में किया जा रहा है, उन्होंने स्वर्गीय उपहार का स्वाद चखा है, जिसे उन्होंने इसमें साझा किया है पवित्र आत्मा, उन्होंने परमेश्वर के वचन की अच्छाई का स्वाद चखा है, उन्होंने आने वाले युग की शक्तियों का स्वाद चखा है, और फिर वे दूर हो गए हैं। और वे इस पाठ के भाग या तत्व हैं जिन पर मैं ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, और पूछना चाहता हूँ कि पुराना नियम हमें इसे समझने में कैसे मदद कर सकता है। इसलिए अगले सत्र में, हम पुराने नियम, रोमन, मुझे क्षमा करें, इब्रानियों 6, 4 से 6 में इस विवरण की संभावित पुराने नियम की पृष्ठभूमि का पता लगाने का प्रयास करेंगे।